

आईआईएम रांची में हिंदी दिवस, हिंदी पखवाड़ा 2026 का शुभारंभ

आईआईएम रांची में 'हिंदी पखवाड़ा': अभिनेता विजय विक्रम सिंह बोले-

'लोकतांत्रिक है हिंदी, हर बोली में आसानी से घुल-मिल जाती है'

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आईआईएम रांची में चल रहे 'हिंदी पखवाड़ा 2026' के तहत 'सोलटॉक' का आयोजन किया गया, जिसमें प्रसिद्ध अभिनेता और वॉयस कोच विजय विक्रम सिंह बतौर मुख्य वक्ता शामिल हुए। उन्होंने राष्ट्रीय हिंदी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हिंदी एक बेहद लोकतांत्रिक भाषा है। आज की हिंदी असल में 'हिंदुस्तानी' है, जिसकी कई बोलियां हैं और यह एकमात्र ऐसी भाषा है जो किसी भी क्षेत्रीय भाषा या बोली के साथ आसानी से रम जाती है। 'सिनेमा, समयचक्र और हिंदी' विषय पर बोलते हुए उन्होंने अपने जीवन



के संघर्षों और अनुभवों को साझा किया। उन्होंने बताया कि अवसाद के दौर से गुजरते समय उन्होंने अपनी आवाज को पहचाना और वॉयस ओवर की दुनिया में मुकाम बनाया। विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि मंजिल की तलाश से ज्यादा जरूरी खुद को तलाशना है। इस दौरान उन्होंने

हरिवंश राय बच्चन की प्रसिद्ध रचना 'मधुशाला' का पाठ भी किया। डिजिटल युग में पठन-पाठन पर जोर देते हुए सिंह ने कहा कि लोग किताबें पढ़ना भूल गये हैं, जिससे नये शब्द सीखने का दायरा घट रहा है। शब्दों का अच्छा भंडार ही व्यक्ति को बेहतरीन वक्ता बनाता है। उन्होंने

प्रबंधन के विद्यार्थियों को ऑस्कर वाइल्ड जैसे लेखकों को पढ़ने और संवाद कौशल के जरिए कॉरपोरेट जगत में प्रभावशाली प्रदर्शन करने की सलाह दी। कार्यक्रम के अंत में डीन (अकादमिक) प्रो. तनुश्री दत्ता ने उन्हें स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

हिंदी भाषा लोकतांत्रिक है, हर बोली में रम जाती है : विजय



आइआइएम रांची में आयोजित कार्यक्रम में शामिल लोग • स्वयं

जागरण संवाददाता, रांची :

आइआइएम रांची में चल रहे हिंदी पखवाड़ा-2026 के अंतर्गत सोल टाक का आयोजन हुआ। इसमें अतिथि वक्ता के रूप में अभिनेता और वायस कोच विजय विक्रम सिंह शामिल हुए। हिंदी भाषा लोकतांत्रिक है। आज की हिंदी हिंदुस्तानी है,

जिसकी कई बोलियां हैं। हिंदी ऐसी भाषा है, जो अन्य क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों के साथ आसानी से रम जाती है। सोल टाक में विजय ने सिनेमा, समयचक्र और हिंदी विषय पर अपने विचार साझा किए। हिंदी भाषा ने उन्हें संवाद कौशल और वायस ओवर की दुनिया में पहचान दिलाई।

रांची गुरुवार 17 सितंबर, 2026

City भास्कर



विजय विक्रम सिंह

आईआईएम रांची युवाओं से रूबरू हुए 'बिग बॉस' फेम वॉयस ओवर आर्टिस्ट विक्रम सोल टॉक... मंजिल खोजने से पहले खुद को तलाशना सीखो, तुम्हारी आवाज ही तुम्हारी पहचान है: विजय विक्रम सिंह

सिटी रिपोर्टर • रांची

मंजिल की तलाश से ज्यादा जरूरी है खुद को तलाशना। एक वक्त था जब मैं गहरे अवसाद (डिप्रेशन) में था और निराशाहीन भावसून बन रहा था। उसी अंधेरे दौर में मेरा परिचय अपनी ही आवाज से हुआ। मैंने खुद को तलाश, वॉयस ओवर की दुनिया में उतारा और आज यही आवाज मेरी सबसे बड़ी ताकत बन गई। यह प्रेरणादायी अनुभव साझा किया मशहूर अभिनेता और जाने-माने वॉयस कोच विजय विक्रम सिंह ने। मौका था आईआईएम रांची में आयोजित 'हिंदी पखवाड़ा 2026' के तहत विशेष सत्र 'सोल टॉक' का। युवा फ्रेंचर-मैनेजर्स से खूबखूब भरे सभागार में उन्होंने न सिर्फ हिंदी की जीवंतता पर बात की, बल्कि बताया कि कैसे भाषा और संवाद कोरल (कम्युनिकेशन) किसी भी युवा को करियर की भाड़ में सबसे अलग खड़ा कर सकता है। सत्र के दौरान उन्होंने जब 'मधुराला' की टॉक का। युवा फ्रेंचर-मैनेजर्स से खूबखूब भरे सभागार में उन्होंने न सिर्फ हिंदी की जीवंतता पर बात की, बल्कि बताया कि कैसे भाषा और संवाद कोरल (कम्युनिकेशन) किसी भी युवा को करियर की भाड़ में सबसे अलग खड़ा कर सकता है। सत्र के दौरान उन्होंने जब 'मधुराला' की टॉक का।

डिप्रेशन के दौर में अपनी आवाज पहचानी; किताबें पढ़ने से बनेंगे प्रभावशाली वक्ता

डिजिटल दौर में किताबों से दूरी नुकसानदेह, शब्द दिलाएंगे बढ़त

शब्दावली का खजाना: किताबें पढ़ने से नए शब्द मिलते हैं। जिसके पास शब्दों की ताकत है, वही मंच और बोर्डरूम दोनों जगह असरदार वक्ता बन सकता है।

किताबें पढ़ो, तो पूरा हलत बालियों से गुंज उठे। कार्यक्रम के समापन पर कार्यक्रम समन्वयक प्रो. सत्यम ने विजय विक्रम सिंह को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर डॉन (अकादमिक) प्रो. तनुजी दत्त सहित कई फैकल्टी मेंबर्स और भारी संख्या में शिक्षार्थी मौजूद रहे।

यूथ कनेक्ट: कॉर्पोरेट लीडरशिप के 3 रूल्स

1. खुद की ताकत पहचानें: दूसरों की नकल करने के बजाय अपनी वास्तविक आवाज और क्षमता पर भरोसा रखें।
2. अडैप्टिविटी (लचीलापन): हिंदी की तरह बनें, जो हर क्षेत्रीय बोली और परिस्थिति में सहजता से ढल जाती है।
3. संवाद से उपस्थिति: कॉर्पोरेट वर्ल्ड में आपकी डिग्री के साथ भाषा शैली व अभिव्यक्ति का स्तर ही पहचान दिलाता है।

Dainik Bhaskar_17.09.2026_P.6

हिन्दी दिवस

जोन्हा में शूट हुई फिल्म की स्क्रीनिंग आईआईएम... एआई के दौर में दिल की भाषा सिखाएंगी क्षेत्रीय बोलियां

सिटी रिपोर्टर: आधुनिक तकनीक, मैनेजमेंट के फॉर्मूले व एआई के इस तेज रफ्तार दौर में अपनी माटी, संवेदना व भाषा से जुड़े रहना कितना जरूरी है—इसकी मिसाल सोमवार को आईआईएम रांची के परिसर में देखने को मिली। संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से 'राष्ट्रीय हिंदी दिवस' पर 28 सितंबर तक चलने वाले 'हिंदी पखवाड़ा 2026' का शानदार आगाज हुआ। मुख्य अतिथि फिल्म 'ह्यूमन्स इन द लूप' के लेखक-निर्देशक अरण्य सहाय, कार्यकारी निर्माता बीजू टोप्पो व अभिनेता अनुराग लुगुन मौजूद रहे। निर्देशक प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी दिवस केवल एक सांकेतिक रस्म बनकर नहीं रह जाना चाहिए। उन्होंने कहा, "भारत की भाषाई विविधता ही उसकी असली ताकत है। हिंदी के साथ-साथ सभी क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान जरूरी है।" समन्वयक प्रो. सत्यम ने हिंदी के महत्व को बताया।



74 मिनट की फिल्म बनी चर्चा का केंद्र

इस मौके पर 74 मिनट की फिल्म 'ह्यूमन्स इन द लूप' की विशेष स्क्रीनिंग हुई, जिसने विद्यार्थियों को गहरे तक प्रभावित किया। आदिवासी परिवेश और एआई के दौर में मानवीय संवेदनाओं की अहमियत को रेखांकित करती इस फिल्म पर चर्चा करते हुए निर्देशक अरण्य सहाय ने बताया, "इस फिल्म को पूरा करने में एक साल लगा। इसकी शूटिंग रांची के साधुगढ़ी (जोन्हा) में हुई है।

आज का आकर्षण: आज मशहूर वॉइस कोच, अभिनेता और टीवी शो 'बिग बॉस' के सूत्रधार विजय विक्रम सिंह से रूबरू होने का मौका मिलेगा। वे 'सिनेमा, समयचक्र और हिंदी' विषय पर अपने विचार रखेंगे।

Dainik Bhaskar_Date-15/09/2026_P.04.



हिंदी के साथ क्षेत्रीय भाषाएं विकसित करती हैं सोशल इंटेलिजेंस : निदेशक :
आइआइएम रांची के राजभाषा प्रकोष्ठ ने राष्ट्रीय हिंदी दिवस का आयोजन किया और
'हिंदी पखवाड़ा 2026' की शुरुआत की। इस अवसर पर फिल्म 'ह्यूमनस इन द लूप' के
लेखक एवं निर्देशक अरण्य सहाय, कार्यकारी निर्माता बीजू टोप्पो और अभिनेता अनुराग
लुगुन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. सत्यम ने कहा कि भाषा केवल संचार
का माध्यम नहीं, बल्कि यह कविता, कहानी और किस्सों का आधार है।

भाषा के सशक्तिकरण से मजबूत होगी सामाजिक समझ: प्रो. दीपक

आईआईएम में हिंदी दिवस पर फिल्म प्रदर्शन और पैनल चर्चा, हिंदी के प्रयोग पर जोर



रांची, विशेष संवाददाता। भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम), रांची में सोमवार को हिंदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी दिवस को सिर्फ सांकेतिक रूप से मनाने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। देश की विविधतापूर्ण संस्कृति को देखते हुए हिंदी को क्षेत्रीय और जनजातीय भाषाओं से जोड़कर भाषा के विकास को आगे बढ़ाने की जरूरत है।

उन्होंने कहा, हिंदी अपनी सहजता और सरल प्रवाह के कारण देश की विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को जोड़ने का काम करती है। आईआईएम जैसे संस्थानों में हिंदी और जनजातीय भाषाओं से जुड़े कार्यक्रम विद्यार्थियों को भाषायी रूप से सशक्त बनाने के साथ उनकी सामाजिक समझ को भी व्यापक करते हैं। कहा कि सामाजिक बौद्धिकता और संवेदनशीलता के



आईआईएम रांची में सोमवार को विश्व हिंदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो दीपक श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी दिवस को सिर्फ सांकेतिक रूप से मनाने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। निदेशक ने अतिथियों को सम्मानित किया।

विकास के लिए भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन जरूरी है।

कार्यक्रम के समन्वयक प्रो सत्यम ने कहा कि भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं है। शब्दों को शब्दकोश तक सीमित रखने के बजाय उन्हें समाज और जीवन से जोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी विभिन्न भाषाओं में घुल-मिल जाती है, यही वजह है कि यह

आमजन की भाषा बन पाई है।

मौके पर फिल्म प्रदर्शन और पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने 74 मिनट की फिल्म- ह्यूमन्स इन द लूप देखी। फिल्म के निदेशक और लेखक अरण्य सहाय, निर्माता बीजू टोप्पो और कलाकार अनुराग लुगुन ने परिचर्चा में हिस्सा लिया। निदेशक अरण्य सहाय ने कहा कि आदिवासी समाज से आम

लोगों को सीखने की जरूरत है कि समस्याओं के समाधान के लिए प्रकृति से जुड़कर किस तरह रास्ते तलाशे जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के दौर में मानवीय संवेदनाओं में बदलाव आ रहा है। ऐसे समय में मनुष्य का प्रकृति से जुड़ाव बनाए रखना और मानवीय संवेदनाओं को मजबूत करना जरूरी है।

एआई के दौर में भाषा, संस्कृति और प्रकृति से जुड़ाव जरूरी : प्रो. दीपक



रांची: तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तेजी से बढ़ते प्रभाव के बीच भाषा, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं को बचाए रखने की जरूरत है। इसी सामाजिक सरोकार के साथ आईआईएम रांची में राष्ट्रीय हिंदी दिवस पर हिंदी पखवाड़ा-2026 की शुरुआत हुई। संस्थान के निदेशक प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी दिवस को महज औपचारिकता नहीं बनाया जाना चाहिए। भारत की भाषाई विविधता को देखते हुए हिंदी के साथ सभी क्षेत्रीय भाषाओं को समान महत्व और प्रोत्साहन मिलना जरूरी है। उन्होंने कहा कि भाषाई समृद्धि व्यक्ति को सशक्त बनाने के साथ उसकी सामाजिक बुद्धिमत्ता भी विकसित करती है। राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से आयोजित कार्यक्रम में फिल्म ह्यूमनस इन द लूप की विशेष स्क्रीनिंग हुई। आदिवासी परिवेश पर आधारित 74 मिनट की फिल्म ने एआई के दौर में मानवीय संवेदनाओं और प्रकृति से जुड़ाव के सवाल को सामने रखा। निर्देशक अरण्य सहाय ने कहा कि तकनीक के साथ आगे बढ़ते हुए भी प्रकृति से जुड़ना और उससे सीखना जरूरी है। उन्होंने फिल्म निर्माण के अनुभव साझा किए। कार्यक्रम में कार्यकारी निमाता बीजू टोप्पो और अभिनेता अनुराग लुगुन भी मौजूद रहे।

हिंदी ने दी नई सोच, संवाद और अभिव्यक्ति की ताकत

संवाददाता

रांची: आईआईएम रांची में चल रहे हिंदी पखवाड़ा 2026 के तहत अभिनेता एवं वॉयस कोच विजय विक्रम सिंह के साथ सोल टॉक का आयोजन किया गया। सिनेमा, समयचक्र और हिंदी विषय पर उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए हिंदी की विविधता और उसकी सहज स्वीकार्यता पर विचार साझा किए।

उन्होंने कहा कि हिंदी लोकतांत्रिक भाषा है और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं व बोलियों के साथ आसानी से घुल-मिल जाती है। विजय विक्रम सिंह ने अपने जीवन के अनुभव साझा करते हुए



बताया कि एक दौर में वे अवसाद और जीवन की दिशा तलाशने के दौर से गुजर रहे थे। इसी दौरान उन्हें अपनी आवाज की पहचान हुई और उन्होंने वॉयस ओवर के

क्षेत्र में खुद को प्रशिक्षित किया। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि मंजिल तलाशने से अधिक जरूरी खुद को तलाशना है। हरिवंश राय बच्चन की मधुशाला का पाठ

करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों को लक्ष्य के प्रति केंद्रित रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने डिजिटल दौर में किताबों से बढ़ती दूरी पर चिंता जताई और कहा कि शब्द भंडार बढ़ाने से व्यक्ति बेहतर वक्ता बन सकता है। संवाद कौशल, बदलाव को अपनाने और परिस्थितियों के अनुरूप ढलने को उन्होंने कॉर्पोरेट सफलता के लिए महत्वपूर्ण बताया। कार्यक्रम के समापन पर कार्यक्रम समन्वयक प्रो. सत्यम ने विजय विक्रम सिंह को स्मृति चिह्न देकर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर डीन (अकादमिक), प्रो. तनुश्री दत्ता समेत अन्य प्राध्यापक, पदाधिकारी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

हिंदी लोकतांत्रिक भाषा, हर बोली में रम जाती है

रांची. आईआईएम रांची में चल रहे हिंदी पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत बुधवार को सोल टॉक का आयोजन हुआ। इसमें अतिथि वक्ता अभिनेता व वॉयस कोच विजय विक्रम सिंह शामिल हुए। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा लोकतांत्रिक है। आज जो हिंदी है, वह हिंदुस्तानी है, जिसकी कई बोलियां हैं। हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो अन्य क्षेत्रीय भाषा या बोली के साथ आसानी से रम जाती है। विजय ने सिनेमा, समयचक्र और हिंदी विषय पर अपनी बातें रखीं। विद्यार्थियों को किताबों की दुनिया में लौटने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में लोग किताबें नहीं पढ़ रहे हैं, जिससे वे नयी शब्दावली नहीं सीख पा रहे हैं। यदि व्यक्ति के पास शब्दों का भंडार हो, तो वह अच्छा वक्ता बन सकता है। कार्यक्रम के समापन पर डीन (अकादमिक) प्रो. तनुश्री दत्ता ने विजय विक्रम सिंह को स्मृति चिह्न देकर उनका सम्मान किया।

आईआईएम रांची में मना राष्ट्रीय हिंदी दिवस

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। आईआईएम रांची के राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से राष्ट्रीय हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इसके साथ ही संस्थान में 28 सितंबर 2026 तक चलने वाले हिंदी पखवाड़ा 2026 का विधिवत शुभारंभ हुआ। इस विशेष अवसर पर मुख्य अतिथि फिल्म मूनस इन द लूप के लेखक एवं निर्देशक अरण्य सहाय, कार्यकारी निमाता बीजू टोप्पो और अभिनेता अनुराग लुगुन उपस्थित रहे। उद्घाटन सत्र में स्वागत करते हुए कार्यक्रम समन्वयक प्रो. सत्यम ने कहा कि भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं है। भाषा से कविता, कहानी और किस्से बनते हैं, जो लोगों की स्मृतियों में हमेशा जीवंत रहते हैं।



संस्थान के निदेशक प्रो. दीपक कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हिंदी दिवस को केवल एक सांकेतिक दिवस के रूप में नहीं मनाया जाना चाहिए। भारत में भाषाओं की समृद्ध विविधता है, इसलिए हमें केवल एक भाषा तक सीमित नहीं रहना है। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए 74 मिनट की फिल्म मूनस इन द लूप की विशेष स्क्रीनिंग की गई। आदिवासी परिवेश पर आधारित यह फिल्म

दशार्ती है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के इस आधुनिक दौर में लोग किस प्रकार अपनी मानवीय संवेदनाओं का उपयोग अलग-अलग कार्यों में करते हैं। फिल्म के बाद परिचर्चा आयोजित की गई। इस अवसर पर संस्थान के डीन, एग्जीक्यूटिव एजुकेशन एंड कंसल्टिंग (ईईसी), प्रो. अमित सचान, प्राध्यापक, शिक्षणेतर कर्मचारी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

आईआईएम रांची में चल रहे 'हिंदी पखवाड़ा' में पहुंचे अभिनेता विजय विक्रम सिंह

प्रातः नागपुरी संवाददाता

रांची। आईआईएम रांची में चल रहे 'हिंदी पखवाड़ा 2026' के अंतर्गत 'सोलटॉक' का आयोजन हुआ। इसमें वतौर अतिथि वक्ता अभिनेता और वॉयस कोच विजय विक्रम सिंह शामिल हुए। हिंदी की महिमा का गुणगान करते हुए विजय ने कहा कि हिंदी भाषा लोकतांत्रिक है। आज जो हिंदी है, वह हिंदुस्तानी है, जिसकी कई वोलियां हैं। हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो अन्य क्षेत्रीय भाषा या बोली के साथ आसानी से रम जाती है। सोलटॉक के दौरान विजय ने सिनेमा, समयचक्र और हिंदीर विषय पर अपनी बातें रखीं। श्री सिंह ने विद्यार्थियों को किताबों



की दुनिया में वापस लौटने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में लोग किताबें नहीं पढ़ रहे हैं, जिससे वे नई शब्दावली नहीं सीख पा रहे हैं। यदि व्यक्ति के पास शब्दों का भंडार हो, तो वह अच्छा वक्ता बन सकता है। कार्यक्रम के

समापन पर डीन (अकादमिक), प्रो. तनुश्री दत्ता ने विजय विक्रम सिंह को स्मृति चिह्न देकर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर कार्यक्रम समन्वयक प्रो. सत्यम समेत संस्थान के अन्य प्राध्यापक, अधिकारी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

आईआईएम के 'हिंदी पखवाड़ा' में पहुंचे अभिनेता विजय विक्रम सिंह, कहा

हिंदी भाषा लोकतांत्रिक है, हर बोली में रम जाती है

नवीन मेल संवाददाता

रांची। आईआईएम में चल रहे 'हिंदी पखवाड़ा 2026' के अंतर्गत 'सोलटॉक' का आयोजन हुआ। इसमें बतौर अतिथि वक्ता अभिनेता और वॉयस कोच विजय विक्रम सिंह शामिल हुए। हिंदी की महिमा का गुणगान करते हुए श्री विजय ने कहा कि, "हिंदी भाषा लोकतांत्रिक है। आज जो हिंदी है, वह हिंदुस्तानी है, जिसकी कई बोलियां हैं। हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो अन्य क्षेत्रीय भाषा या बोली के साथ आसानी से रम जाती है।" सोलटॉक के दौरान श्री विजय ने "सिनेमा, समयचक्र और हिंदी" विषय पर अपनी बातें रखीं। उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि कैसे हिंदी भाषा ने उन्हें संवाद कौशल और वॉयस



ओवर की दुनिया में एक बड़ी पहचान दिलाई। परिचर्चा सत्र के दौरान श्री सिंह ने विद्यार्थियों को किताबों की दुनिया में वापस लौटने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि आज के डिजिटल युग में लोग किताबें नहीं पढ़ रहे हैं, जिससे वे नई शब्दावली नहीं सीख पा रहे हैं। यदि व्यक्ति के पास शब्दों का भंडार हो, तो वह अच्छा वक्ता बन सकता है। उन्होंने प्रबंधन शिक्षा में ऑस्कर वाइल्ड जैसे लेखकों को गंभीरता से पढ़ने पर जोर दिया। उनका मानना था कि भाषा एक सोच की तरह है, जो व्यक्ति को सटीक

अभिव्यक्ति और एक नया नजरिया देती है। इसके माध्यम से जीवन में एक बेहतर इंसान बना जा सकता है और कठिन से कठिन समय में समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों को "संवाद के माध्यम से अपनी उपस्थिति, किसी भी परिस्थिति में ढलने और लगातार बदलाव को अपनाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि कॉर्पोरेट जगत में भाषा, संवाद कौशल और आवाज के दम पर कैसे बेहतर और प्रभावशाली प्रदर्शन किया जा सकता है।



मंजिल से ज्यादा खुद को तलाशना जरूरी: विजय

रांची। भारतीय प्रबंधन संस्थान रांची में हिंदी पखवाड़ा-2026 के तहत 'वार्ता' में अभिनेता व वॉयस कोच विजय विक्रम सिंह बतौर अतिथि वक्ता शामिल हुए। उन्होंने 'सिनेमा, समयचक्र और हिंदी' विषय पर विद्यार्थियों से अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि मंजिल से ज्यादा खुद को तलाशना जरूरी है। हिंदी पर कहा हिंदी एक लोकतांत्रिक व समावेशी भाषा है, जो अन्य बोलियों के साथ आसानी से घुल-मिल जाती है।

किताबें पढ़ने से शब्दावली समृद्ध होती है और अच्छा वक्ता बनने में मदद मिलती है। इस दौरान डीन अकादमिक प्रो. तनुश्री दत्ता, समन्वयक प्रो. सत्यम सहित कई प्राध्यापक व छात्र उपस्थित थे।